राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

धनमेव न सर्वस्वं, तत् श्रेष्ठा मनुष्यता ।
धनार्थं नैव नाश्याऽस्ति, दुर्लभा स्व-मनुष्यता ॥२२६॥

धन ही सब कुछ नहीं होता है । उस धन से भी श्रेष्ठ मनुष्यता होती है । धन के लिये दुर्लभ अपनी मनुष्यता को नष्ट नहीं करना चाहिये ।

Wealth is not everything. Humanity is higher than wealth. Our rare humanity should not be destroyed because of wealth.

धनं नास्ति यदा पार्श्वे, तदा कोऽपि न पृच्छति ।
तस्माद् व्यर्थो व्ययस्तस्य, करणीयः कदापि न ॥२२७॥

जब पास में धन नहीं होता है तो व्यक्ति को कोई भी नहीं पूछता है । अतः व्यर्थ व्यय उस धन का कभी नहीं करना चाहिये ।

Nobody asks about a person who has no money. Therefore, money should be not wasted.

धन्या वीर-सुपुत्रास्ते, ये विदेशि-प्रशासनात् ।
भारत - मातरं स्वीयां, प्राणोत्सर्गैर्व्यमोचयन् ॥२२८॥

वे वीर सपूत धन्य हैं जिन्होने विदेशियों के प्रशासन से अपनी भारत माता को प्राणदान से छुड़वाया ।

Blessed are those brave sons who gave their lives to free Bharat Mata from the foreigners.

धन्यास्ते मानवं देहं, सम्प्राप्य पशुवन्न ये ।

नाशयन्ति तुच्छकृत्यैर्, जीवन्ति ससुखं च ये ॥२२९॥

वे व्यक्ति धन्य हैं जो मानव शरीर पाकर उसको पशुओं के समान तुच्छ कार्यों से नष्ट नहीं करते हैं और सुख के साथ जीते रहते हैं ।

Blessed is the one who does not waste this human body, like an animal doing insignificant work, and lives happily.

धर्मः प्रदशनीयो न, पालनीयः सदा हि सः ।

पालितो हितकारी स, कष्टदः स प्रदर्शितः ॥२३०॥

धर्म प्रदर्शन करने की चीज नहीं है, वह तो सदा ही पालनीय है । पालन किया हुआ वह धर्म हितकारी होता है तो प्रदर्शन किया हुआ कष्टकारी ही होता है ।

Religion is not something to be shown; it is to be lived. Living religion is beneficial and theatrical one is troublesome.

धर्म–नाम्ना कियन्तो न, दुराचारा भवन्ति हि ?।

ईश्वरोऽपि न तान् रुन्धे, तस्येच्छा ज्ञायते नहि॥२३१॥

धर्म के नाम से कितने दुराचार नहीं पनप रहे ? ईश्वर भी उनको नहीं रोकता । उसकी इच्छा ज्ञाता नहीं होती ।

How many misconducts don't flourish in the name of the religion? Not even God is stopping it. God's will is unknown.

धर्मार्थं ये नियुध्यन्ते, पापं ते कुर्वते नहि ।

धर्मः संरक्षितस्तैस्तु, तेषां शं कुरुते सदा ॥२३२॥

जो धर्म के लिये युद्ध करते हैं वे पाप नहीं करते हैं । उनके द्वारा रक्षा किया हुआ धर्म तो सदा उनका कल्याण ही करता है ।

Those who fight in the name of the religion do not sin. The religion protected by them always does well for them.